

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.

The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

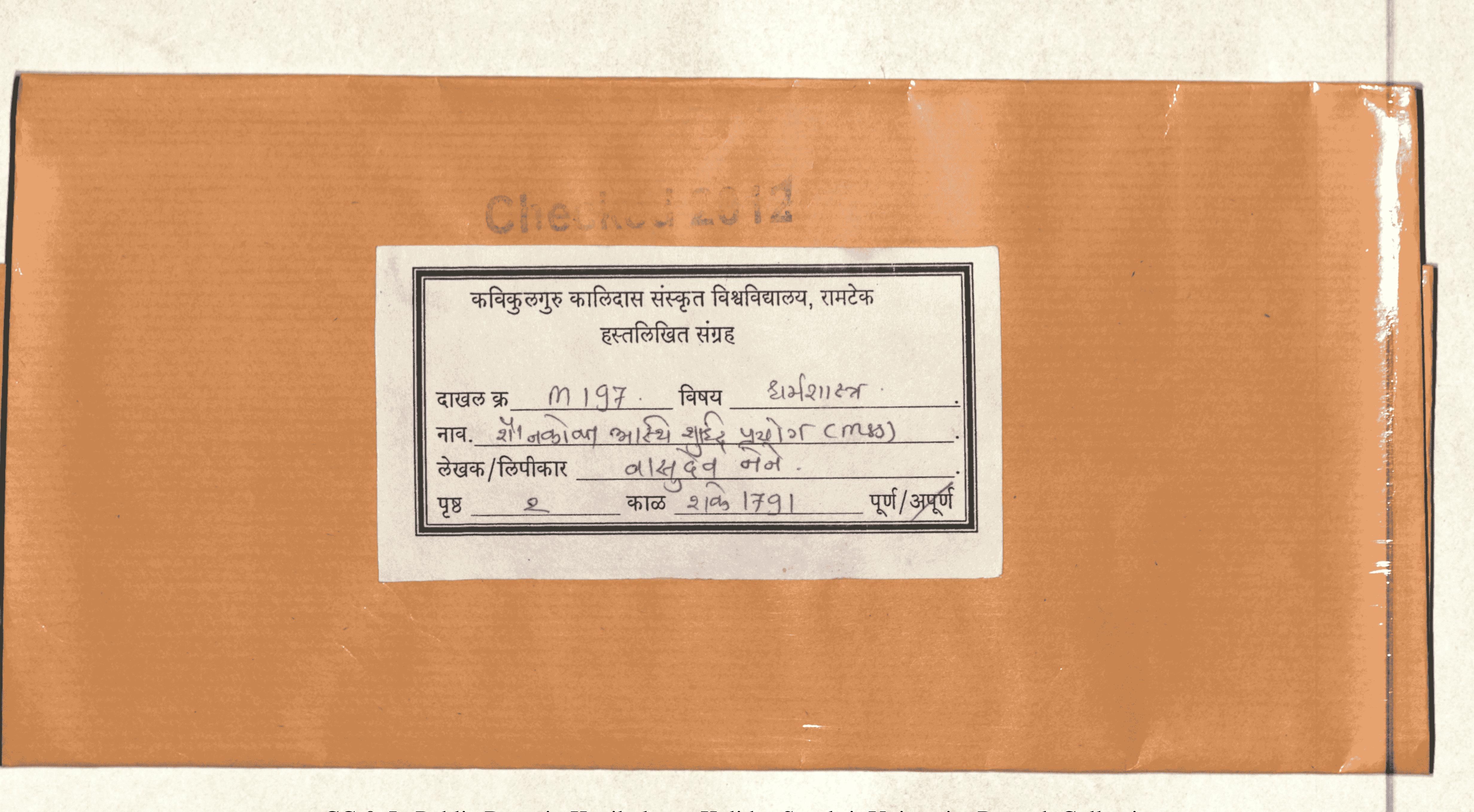
https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्री ।। अथ श्री नकी का स्व शुद्ध विधि के तुमशक्त श्रे नवामय स्वीक्त कारेणास्व श्रिः। की यी।। ममिपिनः गात्र स्यामुक शर्मणः गें गायांकरिष्यमाणास्वित्र से पार्थ निष्क्षता स्विम्हणं के रिष्य। इतिसं स्य।। यि प्रानावीती।। विक्षित्रास्विसमीचे ग लापंच गव्येन त्यं प्राप्ति प्रास्त्रास्य प्रम्मितिको इस्य अस्थीन्यादायसार्यास्वापंच गव्येन दिवार प्रशा स्यम्यिक्तिको इस्य अस्थीन्यादायसार्यास्वापंच गव्येन दिवार प्रशा स्यम्यिक्तिको इस्य अस्थीन्यादायसार्यास्वापंच गव्येन दिवार प्रशा स्यम्यिक्ति इस्य स्थानावी किल्यान स्था। गाय त्याणीम् त्रेणा १। गंधदा समिति गोमयेन। १। आष्याय स्वित्य सा। १। प्राप्ति क्रिशो देवेन। ६। अभिष्वचामी निवाक्यशेषः। मानक्तीके तिभस्मन। १। अ श्र्यकांनोनिमक्तिया। ६। मध्यातिन मधुना। १। आपोहिष्टेनिभुक्षो

तस्यम्

िषु दक्ना १ । इतिदशस्ता ना निक ला त्रिप रूपरिमितं कुं कुर्मेन चंदनं एतद धंक चूरसममेन चृतसारः परिक्रेषपरिमितकस्तूरी त्यक ममे रूने य शकर्मित न यशकर्म रिपेन रिक ला पुष्पे प्रयूज्य पृह्व स्न क्षोरो य मा जिछ श्वेतव स्न कं बरु शणपुनः पृह्वस्ना जिने र शाभिरुपर्युपरिसंवे स्यताम्नपुटे स्छाप्य चांडा रुगादि ना अस्र सृश्चि स्ती र्थं गचेत् ।। मू त्रपुरी षादी तुपूर्वी कप्रका रोबे ध्यः ।। एवं ती यं प्राप्यतत्रास्छी सहितस्ना लाप रुग शपत्रपुटे स्छी निनि धाय।। प्राची ना वी ती ।। अमुक ग्रीत्र स्था मुक शर्मणाः शाश्वत श्रार्म स्था निने च गव्येन प्रशा व गं गाया मिस्क प्रश्चे पे कि दिखे।। इति संकु स्था अस्छी निने च गव्येन प्रशा त्या मधु धृत ति रुहेम शक रिने सह मु लिंडे नि धा यद शिणतो वेश माणे। ना भ्रमात्रे ज रिने स्था स्ना त्वा ज रुग के हिरा गायस मित्रीत येस्का। इति मंत्रेण ती थे अस्छ प्रशिष्ण स्ना त्वा ज रुग के हिरा गायस स्था न त्वा चहिरी

संस्था।उपनीती।। जा मुक गा नस्या जा मुक शर्मणः ब्रम्स शिकावान ये जा स्थे प्र श्नेनकर्मणः स्नांगताये इदंर जा तं चं द्रदे व त्यंदिशणा ते नसंप्र दददित ब्राम्हणायद त्या यस्य स्म त्ये त्या क्रा क्रा कर्म कर्म ईश्वरा यसमध्ये।।एत दं तरंती यीनिधिः का यः एवं मातः पितृ कु शाद्य त्या स्थानितः पुरुषस्य दोष उक्तो मदनर ते ब्राम्हे।। मातुः कु रंग पितृ कु रंग वर्ज यित्वा नरा ध माः।। अझेंथी त्या बक्त रुखस्य नी त्या चां द्रा यणं चरेत् ॥ इदं द्र व्यादि हो। भविषयं।। पित्राद्दी ने तस्त तत्रे व ब्रम्हं। हे।। अस्थी निमाता पितृ पूर्व जा नं चं ति गं गामिप यक्यं चित्।। सहां धनस्यापिद या भित्रता तेषां तु ती थीनिक रुप्रदानि।। एवं कते ते त्र तपुर स्थित स्थानिक स्थानिक

अ०११ त्रचागः॥ततस्तामपुटेश्स्वीनितधाय-वांडारुपतित ब्रात्मादिस्पर्श के लेव न् रा त्रिस्ती धॅग छेत्।। मूत्रपुरीषसंभाव नायां अस्किनिकुत्रचित्सा धारंस्म व्य गोनिर्वर्त्व यथावछो चा-समनेति धायपुनरस्की न्यादारग छेत्॥तत्रमा र्ग । स्नात्वापाकादिकं कत्वाभोजनादिक माचरेत्।।देवान्यत्न स्समभ्य च्य गछेती धॅयथाविधि।।अस्किशुद्धोदिन रा स्थितिचारः॥स्कमुहूर्ते रात्रमेवा रेस्करुगेतिविश्वर्जिते त्रिपादं ध्रवनश्चतं धितिचारं॥स्कमुहूर्ते रात्रमेवा रेस्करुगेतिविश्वर्जिते त्रिपादं ध्रवनश्चतं धितिचारं चकं स्वथा।। गुरुभोपाकि वाराश्वर्यत्का बात्य श्रमं युने॥ असंगतेगुरी राज्ञेतथा मासिमिति मर् चे ॥गंगाया मस्किनि श्रेपं नकु र्यादितिगोतमः॥ इति अस्किश्वरितः।। २ इदंपु स्तकं ने ने इत्सप नामक वास्तदे ने ण तिरित्तनं।। शके १७। ११श्वरु संः

```
[OrderDescription]
,CREATED=07.08.19 11:30
,TRANSFERRED=2019/08/07 at 11:32:35
,PAGES=4
,TYPE=STD
,NAME=S0001367
,Book Name=M-197-SHOUNKOVAN AASHTHI SUDHHI PRAYOG MSS
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000003.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
```